

यीशु को “मार्ग” के रूप में देखना, मेल्कीसेदेक का पुरोहित पद, परदे का फटना और ईश्वर तक पहुंच।

यह प्रवचन योम किप्पुर के संपूर्ण महत्व को यीशु के उद्धार कार्य, परदे के फटने, यीशु के □□□□□;मार्ग□□□□□; होने, मेल्कीसेदेक के पुरोहितत्व (जिसमें रोटी और दाखमधु शामिल हैं), पवित्र आत्मा के संचार, सहभागिता और विश्वासी की मंदिर के रूप में भूमिका को एकीकृत करता है। यह बताता है कि ये तत्व किस प्रकार सहभागिता और ईश्वर तक पहुँच को प्रभावित करते हैं, जो पूरी तरह से पवित्रशास्त्र पर आधारित है।

1. पुराने नियम में योम किप्पुर

योम किप्पुर, जिसका विस्तृत वर्णन लैव्यव्यवस्था 16, लैव्यव्यवस्था 23:26-32 और गिनती 29:7-11 में मिलता है, प्रायश्चित का दिन है, जो इस्राएल की बलि प्रणाली का शिखर है, जो तंबू और लोगों को शुद्ध करके परमेश्वर के साथ उनके वाचा संबंध को बहाल करता है।

- महायाजक: महायाजक (हारून या उसके उत्तराधिकारी) वर्ष में एक बार लहू लेकर परदे के पीछे पवित्रस्थान में प्रवेश करता है, और अपने तथा इस्राएल के पापों का प्रायश्चित करता है (लेवी 16:2-6, 16:11-14)। उसका प्रवेश प्रतिबंधित है, और अपने पापों के कारण उसे स्वयं पापबलि का भुगतान करना आवश्यक है (लेवी 16:11)।
- बलिदान: पुजारी के पापों के लिए एक बैल की बलि दी जाती है, और लोगों के पापों के लिए एक बकरी की बलि दी जाती है, और प्रायश्चित के लिए दया सिंहासन पर रक्त छिड़का जाता है (लेवी 16:11, 16:15-16)।
- बलि का बकरा: महायाजक द्वारा इस्राएल के पापों को स्वीकार करने के बाद, दूसरा बकरा उन पापों को जंगल में ले जाता है, जो उनके हटाए जाने का प्रतीक है (लेव 16:20-22)।
- धूप: महायाजक धूप जलाता है, जिससे एक बादल बनता है जो उसे परम पवित्र स्थान में परमेश्वर की महिमा से बचाता है और मृत्यु से बचाता है (लैव्यव्यवस्था 16:12-13)। धूप प्रार्थना का प्रतीक है (भजन संहिता 141:2, “मेरी प्रार्थना को आपके सामने धूप के समान गिना जाए”)।
- शुद्धिकरण: रक्त तंबू, वेदी और लोगों को पाप की अशुद्धता से शुद्ध करता है, जिससे परमेश्वर की उपस्थिति बनी रहती है (लेवी 16:16-19, 16:30)।
- स्वीकारोक्ति: बलि के बकरे पर महायाजक की स्वीकारोक्ति इस्राएल के पापों को स्थानांतरित करती है (लेवी 16:21)।
- विश्राम और कष्ट: इज़राइल सब्त के दिन विश्राम करता है, काम से परहेज़ करता है, और खुद को कष्ट देता है (संभवतः उपवास करता है), जो विनम्रता और ईश्वर की दया पर निर्भरता को दर्शाता है (लेव 16:29-31, लेव 23:27-32)।
- मेल-मिलाप: रक्त से छिड़का हुआ दया का सिंहासन वह स्थान है जहाँ परमेश्वर इस्राएल से मिलता है (लेवी 16:14, निर्गमन 25:22), लेकिन पहुँच केवल महायाजक तक ही सीमित है।
- सामूहिक और व्यक्तिगत दायरा: प्रायश्चित में पूरी सभा और व्यक्तिगत पाप शामिल हैं (लेव 16:17, 16:30)।
- जंगल: बलि के बकरे को एक उजाड़ जगह पर निर्वासित करने से पाप दूर हो जाता है (लेवी 16:22)।

पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करने वाला पर्दा ईश्वर की पवित्रता और मानव पापीपन के बीच बाधा का प्रतीक था (लेव 16:2), प्रतिबंधित पहुंच और पुराने नियम के अनुष्ठानों की अस्थायी प्रकृति पर जोर देता था, जिसके लिए वार्षिक पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती थी (लेव 16:34)।

2. यीशु द्वारा योम किप्पुर की पूर्ति

नया नियम, विशेष रूप से इब्रानियों की पुस्तक, यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण को योम किप्पुर की अंतिम पूर्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, जो इसके अस्थायी, सांसारिक अनुष्ठानों को एक शाश्वत, स्वर्गीय वास्तविकता में बदल देती है:

□ मेल्कीसेदेक के वंश में महायाजक:

- यीशु मेल्कीसेदेक के क्रम में शाश्वत, निष्पाप महायाजक हैं (इब्रानियों 4:14, 5:6, 7:17, 7:24-25), जो लेवीय याजकत्व से श्रेष्ठ हैं। हारून के विपरीत, जिसे अपने लिए प्रायश्चित की आवश्यकता थी (लेवी 16:11) और जिसका याजकत्व मृत्यु के कारण अस्थायी था (इब्रानियों 7:23), यीशु "हमेशा मध्यस्थता करने के लिए जीवित रहते हैं" (इब्रानियों 7:25)। उनका याजकत्व, मेल्कीसेदेक के याजकत्व के समान (इब्रानियों 7:3, "जिसका न तो दिनों का आरंभ है और न ही जीवन का अंत"), शाश्वत और परिपूर्ण है (इब्रानियों 7:11-28)।
- वह अपने लहू के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश करता है, न कि सांसारिक तंबू में (इब्रानियों 9:24, 9:12), महायाजक की भूमिका को पूरा करते हुए (लेवी 16:2-3)।

□ बलिदान और बलि का बकरा:

- क्रूस पर यीशु की मृत्यु परम पापबलि (इब्रानियों 9:26, "वह एक ही बार प्रकट हुआ... ताकि अपने आप को बलिदान करके पाप को दूर करे") और बलि का बकरा (1 पतरस 2:24, "उसने स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर में वृक्ष पर उठाया"; यशायाह 53:6, "यहोवा ने हम सब के अधर्म को उस पर डाल दिया") है। यरूशलेम के बाहर बहाया गया उसका लहू (यूहन्ना 19:17, इब्रानियों 13:12) योम किप्पुर के वार्षिक बलिदानों (लेवी 16:15-22) के विपरीत, स्थायी रूप से प्रायश्चित करता है (इब्रानियों 10:10) और पाप को दूर करता है।
- उनका बलिदान एक □□□□□;सुगंधित भेंट□□□□□; (इफिसियों 5:2) है, जो योम किप्पुर की मनभावन सुगंध (लेवी 1:9) के समानांतर है।

□ प्रार्थना के रूप में धूप:

- यीशु की सांसारिक प्रार्थनाएँ, विशेष रूप से उनकी महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17:9-20), और स्वर्ग में उनकी निरंतर मध्यस्थता (इब्रानियों 7:25, रोमियों 8:34) धूप के बादल (लेवी 16:12-13) को पूरा करती हैं। विश्वासियों की प्रार्थनाएँ उनके द्वारा धूप की तरह उठती हैं (प्रकाशितवाक्य 5:8, "धूप से भरे सोने के कटोरे, जो संतों की प्रार्थनाएँ हैं"; प्रकाशितवाक्य 8:3-4)।
- भजन संहिता 141:2 प्रार्थना को धूप से जोड़ता है, जिसे यीशु की मध्यस्थता (यूहन्ना 16:23-24) द्वारा पुष्ट किया गया है।

□ शुद्धिकरण:

- यीशु का लहू स्वर्ग के पवित्रस्थान (इब्रानियों 9:23-24) और विश्वासियों के विवेक (इब्रानियों 9:14, 1 यूहन्ना 1:7, "उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है") को शुद्ध करता है। यह योम किप्पुर के अस्थायी शुद्धिकरण से कहीं बढ़कर है (लेवी 16:16-19)।

□ स्वीकारोक्ति और पाप का स्थानांतरण:

- यीशु मानवता के पापों का बोझ उठाते हैं (यशायाह 53:6, 1 पतरस 2:24), बलि का बकरा बनने की भूमिका निभाते हैं (लेवी 16:21)। विश्वासियों के पाप स्वीकारोक्ति उनकी मध्यस्थता से सुनी जाती है (1 यूहन्ना 1:9)।

□ विश्राम और पीड़ा:

- यीशु के पूर्ण किए गए कार्य से शाश्वत विश्राम मिलता है (इब्रानियों 4:9-10, "परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम"; मत्ती 11:28, "मेरे पास आओ... और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा"), जो योम किप्पुर के वार्षिक विश्राम (लेवी 16:31) से कहीं बढ़कर है।

□ सुलह:

- यीशु का लहू प्रायश्चित है (रोमियों 3:25, दया-सिंहासन से जुड़ा हुआ), जो मानवता को परमेश्वर से मिलाता है (कुलुस्सियों 1:20, रोमियों 5:10-11)। उनका कार्य योम किप्पुर के मेल-मिलाप को सार्वभौमिक बनाता है (1 यूहन्ना 2:2)।

□ ईश्वर तक पहुंच:

- यीशु परमेश्वर की उपस्थिति तक सीधी पहुँच खोलता है (इब्रानियों 10:19-22, □□□□□;यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थानों में प्रवेश करने का विश्वास□□□□□;), योम किप्पुर के प्रतिबंधित प्रवेश के विपरीत (लेवी 16:2)।

□ कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र:

- यीशु का प्रायश्चित्त सभी (1 तिमोथी 2:5-6) और व्यक्तियों (जॉन 3:16) को कवर करता है, जो योम किप्पुर के दोहरे दायरे (लेवी 16:17) को पूरा करता है।

□ शिविर के बाहर निर्जन जीवन और कष्ट:

- यीशु को “द्वार के बाहर” क्रूस पर चढ़ाया जाना (इब्रानियों 13:12, यूहन्ना 19:17) बलि के बकरे के निर्वासन (लेवी 16:22) के समानांतर है।

3. मसीह के शरीर के रूप में पर्दे का फटना

यीशु की मृत्यु के समय मंदिर के पर्दे का फटना (मत्ती 27:50-51, मरकुस 15:37-38, लूका 23:45-46) एक ईश्वरीय कार्य है, जिसे इब्रानियों 10:20 में उनके शरीर के रूप में पहचाना गया है (□□□□□; पर्दे के माध्यम से, अर्थात् उनके शरीर के माध्यम से □□□□□;)।

- ईश्वर तक पहुंच: परदे के फटने से पाप की बाधा दूर हो जाती है, जिससे ईश्वर की उपस्थिति का एक “नया और जीवंत मार्ग” खुल जाता है (इब्रानियों 10:19-20)। यह योम किप्पुर के प्रतिबंधित प्रवेश की पूर्ति करता है, जिसमें केवल महायाजक ही परदे के पीछे प्रवेश करता था (लेवी 16:2)।
- इब्रानियों 9:8 की पूर्ति: इब्रानियों 9:8 में लिखा है, “जब तक पहला तंबू खड़ा रहेगा, पवित्र स्थानों में प्रवेश का मार्ग नहीं खुलेगा,” जो पुरानी वाचा की सीमाओं को दर्शाता है। परदे का फटना इन बाधाओं के अंत का प्रतीक है, क्योंकि यीशु के बलिदान ने सांसारिक तंबू को अप्रचलित कर दिया (इब्रानियों 8:13, 9:11-12)।
- यीशु का शरीर: क्रूस पर उनका टूटा हुआ शरीर (यूहन्ना 19:34, इब्रानियों 10:5-10) पहुँच का साधन है, जो पर्दे के अलगाव को परमेश्वर में सीधे प्रवेश से बदल देता है (इब्रानियों 10:22)।
- ईश्वरीय पहल: □□□□□; ऊपर से नीचे तक फाड़ना □□□□□; (मत्ती 27:51) ईश्वर के कार्य का सुझाव देता है, न कि मानवीय प्रयास का, जो यीशु के पूर्ण कार्य (यूहन्ना 19:30, □□□□□; यह पूरा हो गया है □□□□□;) के साथ मेल खाता है।

4. यूहन्ना 14:6 में यीशु को “मार्ग” के रूप में दर्शाया गया है।

यीशु का यह कथन, “मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता” (यूहन्ना 14:6), जो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था (यूहन्ना 14:1-5), उनकी अनन्य भूमिका को परिभाषित करता है।

- मार्ग: यीशु पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है, जो मध्यस्थता को पूर्ण करता है (1 तीमोथियुस 2:5, “परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एकमात्र मध्यस्थ, मनुष्य मसीह यीशु है”)। उनका बलिदान और पुरोहित पद पहुँच प्रदान करते हैं, जो योम किप्पुर के महायाजक से श्रेष्ठ हैं (लेवी 16:2)।
- सत्य: वह ईश्वर के रहस्योद्घाटन (यूहन्ना 1:14, 17:17) को मूर्त रूप देता है, व्यवस्था को पूरा करता है (मत्ती 5:17)।
- जीवन: वह अनन्त जीवन प्रदान करता है (यूहन्ना 10:10, 11:25, रोमियों 6:23)।
- परदे से संबंध: फटा हुआ परदा, उनका शरीर (इब्रानियों 10:20), “नया और जीवित मार्ग” है, जो सीधे यूहन्ना 14:6 में वर्णित “मार्ग” से मेल खाता है। उनकी मृत्यु पिता तक पहुँच का द्वार खोलती है, जिससे उनका दावा पूरा होता है।
- योम किप्पुर से संबंध: यीशु □□□□□; मार्ग □□□□□; के रूप में महायाजक की अस्थायी मध्यस्थता को अपनी शाश्वत याजकीयता से प्रतिस्थापित करता है (इब्रानियों 7:25)।

5. मेल्कीसेदेक का पुरोहित पद और रोटी और दाखमधु

उत्पत्ति 14:18-20 में वर्णित और इब्रानियों 7:1-17 में व्याख्यायित मेल्कीसेदेक, यीशु के पुरोहित पद का पूर्वाभास देता है:

- शाश्वत पुरोहित पद: मेल्कीसेदेक, “बिना पिता या माता या वंशावली के, न तो दिनों का आरंभ और न ही जीवन का अंत” (इब्रानियों 7:3), यीशु के समान है, जिसका पुरोहित पद हमेशा के लिए है (इब्रानियों 7:24)।
- राजा और पुजारी: सलेम के राजा और परमेश्वर के सर्वोच्च पुजारी के रूप में (उत्पत्ति 14:18, इब्रानियों 7:1), वह यीशु द्वारा निर्भाई गई भूमिकाओं को जोड़ता है (जकर्याह 6:13, □□□□□; वह शाही सम्मान धारण करेगा, और अपने सिंहासन पर बैठेगा और शासन करेगा □□□□□;)।

- रोटी और दाखमधु: मेल्कीसेदेक ने “रोटी और दाखमधु निकाला” (उत्पत्ति 14:18), जो अब्राहम के साथ संगति या आशीर्वाद का एक पुरोहितीय कार्य था, और योम किप्पुर के रक्त बलिदानों से भिन्न था। यह प्रभु भोज का पूर्वाभास देता है, जहाँ यीशु के शरीर (रोटी) और रक्त (दाखमधु) से नई वाचा स्थापित होती है (मत्ती 26:26-28, 1 कुरिन्थियों 11:24-25)।
- श्रेष्ठता: मेल्कीसेदेक की महानता, जो अब्राहम के दशमांश (इब्रानियों 7:4-10) द्वारा दिखाई गई है, उसके पुरोहित पद को लेवीय क्रम से श्रेष्ठ बनाती है (इब्रानियों 7:11), जो यीशु के परिपूर्ण पुरोहित पद का पूर्वाभास कराती है (इब्रानियों 7:17, “तुम मेल्कीसेदेक के क्रम के अनुसार सदा के लिए पुरोहित हो”)।
- योम किप्पुर से संबंध: योम किप्पुर के लेवीय महायाजक ने रक्त चढ़ाया (लेवी 16:14-15), लेकिन रोटी और दाखमधु के साथ मेल्कीसेदेक की पुरोहिती एक उच्चतर क्रम की ओर इशारा करती है। यीशु, मेल्कीसेदेक के क्रम में, अपने रक्त से योम किप्पुर के प्रायश्चित्त को पूरा करते हैं (इब्रानियों 9:12) और रोटी और दाखमधु के साथ सहभागिता स्थापित करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-25), इस प्रकार अपनी पुरोहिती को दोनों अनुष्ठानों से जोड़ते हैं।
- कम्युनियन से संबंध: मेल्कीसेदेक की रोटी और दाखमधु (उत्पत्ति 14:18) सीधे कम्युनियन के तत्वों की भविष्यवाणी करते हैं, जो नए वाचा (इब्रानियों 8:6) के मध्यस्थ के रूप में यीशु की भूमिका को सुदृढ़ करते हैं।
- “मार्ग” से संबंध: यीशु “मार्ग” (यूहन्ना 14:6) के रूप में उनके मेल्कीसेदेक पुरोहित पद में सन्निहित हैं, जिसके माध्यम से वह स्वयं को (शरीर और रक्त, रोटी और दाखमधु) पिता तक पहुँचने के मार्ग के रूप में अर्पित करते हैं (इब्रानियों 10:20)।

6. विश्वासी का शरीर एक मंदिर के रूप में

विश्वासी लोग व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से पवित्र आत्मा के मंदिर हैं:

- 1 कुरिन्थियों 6:19-20: “तुम्हारा शरीर तुम्हारे भीतर पवित्र आत्मा का मंदिर है... तुम्हें एक कीमत देकर खरीदा गया है। इसलिए अपने शरीर में परमेश्वर की महिमा करो।”
- 1 कुरिन्थियों 3:16-17: “तुम परमेश्वर का मंदिर हो और... परमेश्वर की आत्मा तुम में वास करती है।”
- इफिसियों 2:21-22: कलीसिया “एक पवित्र मंदिर है... आत्मा द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान है।”
- 2 कुरिन्थियों 6:16: “हम जीवित परमेश्वर का मंदिर हैं” (तुलना करें लैव्यव्यवस्था 26:12)।

योम किप्पुर से संबंध:

- योम किप्पुर ने परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तंबू को शुद्ध किया (लैव्यव्यवस्था 16:16)। यीशु का बलिदान विश्वासियों को शुद्ध करता है (इब्रानियों 9:14), उन्हें आत्मा से आबाद मंदिर बनाता है (1 कुरिन्थियों 6:19), और परमेश्वर के अपने लोगों के बीच निवास को पूरा करता है (निर्गमन 25:22)।

पर्दे से संबंध:

- फटा हुआ पर्दा (इब्रानियों 10:20) पहुँच खोलता है, जिससे आत्मा का निवास संभव होता है, और विश्वासियों को मंदिरों में बदल देता है (2 कुरिन्थियों 6:16)।

“मार्ग” से संबंध:

- यीशु “मार्ग” (यूहन्ना 14:6) के रूप में विश्वासियों को पिता तक पहुँचने का मार्ग प्रदान करके मंदिर बनाता है, जिसके माध्यम से आत्मा निवास करता है (यूहन्ना 14:16-17)।

मेल्कीसेदेक से संबंध:

- यीशु का मेल्कीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) उनके लहू के द्वारा विश्वासियों को मंदिर के रूप में शुद्ध करता है (इब्रानियों 9:14), और सहभागिता की रोटी और दाखमधु इस पुरोहित पद की याद दिलाते हैं (उत्पत्ति 14:18)।

7. पवित्र आत्मा की भूमिका और संचार

पवित्र आत्मा को विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जिससे ईश्वर तक पहुँच और संवाद संभव हो पाता है:

- आत्मा तक पहुँच:

- प्रेरितों के काम 2:38: “पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो... और तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा।”

- इफिसियों 1:13-14: विश्वासियों को विश्वास पर “प्रतिज्ञापित पवित्र आत्मा से मुहरबंद” किया जाता है।
- गलतियों 3:2: आत्मा को “विश्वास के साथ सुनने” से प्राप्त किया जाता है।
- रोमियों 8:9: सभी विश्वासियों में आत्मा है, जो उन्हें मंदिर बनाता है (1 कुरिन्थियों 6:19)।

□ संचार:

- शिक्षा: यूहन्ना 14:26, “वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा।”
- मार्गदर्शन: यूहन्ना 16:13, “वह तुम्हें समस्त सत्य में मार्गदर्शन देगा।”
- मध्यस्थता: रोमियों 8:26, “पवित्र आत्मा हमारे लिए मध्यस्थता करता है।”
- सपने, दर्शन और रहस्योद्घाटन: प्रेरितों के काम 2:17-18 (तुलना करें योएल 2:28-29), “तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे बूढ़े सपने देखेंगे।” उदाहरणों में पतरस का दर्शन (प्रेरितों के काम 10:9-16), पौलुस का मसिडोनियाई दर्शन (प्रेरितों के काम 16:9), और यूहन्ना के रहस्योद्घाटन (प्रकाशितवाक्य 1:10-11) शामिल हैं।

□ ईश्वर तक उचित पहुंच:

- पवित्र आत्मा पुत्रत्व (रोमियों 8:15-16, “हम पुकारते हैं, ‘अब्बा! पिता!’”), प्रार्थना (रोमियों 8:26) और आराधना (यूहन्ना 4:23-24) के माध्यम से परमेश्वर तक पहुँचने में सहायता प्रदान करता है। स्वप्न और दर्शन परमेश्वर की इच्छा प्रकट करके इस मार्ग को और भी सुगम बनाते हैं (प्रेरितों 10:19)।
- इफिसियों 2:18: “उसके द्वारा हम दोनों एक ही आत्मा में पिता के पास पहुँच सकते हैं।”

योम किप्पुर से संबंध:

- योम किप्पुर के अनुष्ठानों से आत्मा का निवास संभव नहीं होता था (इब्रानियों 9:9-10)। यीशु का कार्य आत्मा की उपस्थिति को संभव बनाकर इस आवश्यकता को पूरा करता है (यहेजकेल 36:27)।

परदे से संबंध:

- परदे का फटना (इब्रानियों 10:20) मार्ग खोलता है (इब्रानियों 10:19), इब्रानियों 9:8 की बाधाओं को दूर करता है, और विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के द्वारा आत्मा के निवास को संभव बनाता है (प्रेरितों 2:38)। स्वप्न, दर्शन और प्रकाशनों सहित आत्मा का संचार इसी मार्ग से होता है।

“मार्ग” से संबंध:

- यीशु “मार्ग” (यूहन्ना 14:6) के रूप में मध्यस्थ है जिसके माध्यम से आत्मा को भेजा जाता है (यूहन्ना 16:7), जो विश्वासियों को अपने सत्य में मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:13)।

मेलकीज़ेदेक से संबंध:

- यीशु का मेलकीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) प्रायश्चित्त करता है (इब्रानियों 9:12), जिससे आत्मा का निवास संभव होता है, जो परमेश्वर की इच्छा को बताता है (प्रेरितों 2:17-18)।

8. एक बार होने वाला दीक्षा संस्कार के रूप में बपतिस्मा

बपतिस्मा एक बार की जाने वाली क्रिया है जो विश्वासियों को नए अनुबंध में शामिल करती है:

- प्रेरितों के काम 2:38: “पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो... और तुम्हें पवित्र आत्मा का वरदान मिलेगा।”
- रोमियों 6:3-4: मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकजुट होता है।
- इफिसियों 4:5: “एक बपतिस्मा।”
- प्रेरितों 19:4-6: अक्सर पवित्र आत्मा के ग्रहण से जुड़ा होता है।
- बपतिस्मा विश्वासियों को यीशु की मृत्यु, यानी परदे के फटने (रोमियों 6:3, इब्रानियों 10:20) से जोड़ता है, उन्हें “मार्ग” (यूहन्ना 14:6) पर ले जाता है और पवित्र आत्मा (प्रेरितों 2:38) प्रदान करता है, जो संवाद करता है (प्रेरितों 2:17-18)। पवित्र आत्मा का कार्य बपतिस्मा के बाद भी जारी रहता है (गलतियों 5:16)।

योम किप्पुर से संबंध:

□ बपतिस्मा यीशु के बलिदान के साथ एकता के माध्यम से योम किप्पुर की शुद्धि (लेवी 16:30) को पूरा करता है (रोमियों 6:3-4)।
मेलकीज़ेदेक से संबंध:

- बपतिस्मा यीशु के मेलकीसेदेक पुरोहित पद द्वारा मध्यस्थता की गई नई वाचा में प्रवेश को दर्शाता है (इब्रानियों 8:6), जो पवित्र भोज की रोटी और शराब में प्रतीक है (उत्पत्ति 14:18)।

9. सहभागिता और उसकी भूमिका

यीशु द्वारा स्थापित पवित्र भोज (मत्ती 26:26-28, 1 कुरिन्थियों 11:23-25) उनके शरीर और रक्त की स्मृति में मनाया जाता है:

- रोटी: “यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए है” (1 कुरिन्थियों 11:24), फटा हुआ पर्दा (इब्रानियों 10:20)।
- प्याला: “यह प्याला मेरे लहू में नई वाचा है” (1 कुरिन्थियों 11:25), दया की गद्दी को पूरा करता है (रोमियों 3:25)।
- उद्देश्य: यीशु की मृत्यु को याद करता है (1 कुरिन्थियों 11:24-25), इसकी घोषणा करता है (1 कुरिन्थियों 11:26), एकता को बढ़ावा देता है (1 कुरिन्थियों 10:16-17), और आत्म-परीक्षण की आवश्यकता होती है (1 कुरिन्थियों 11:28)।

योम किप्पुर से संबंध:

- पवित्र भोज यीशु द्वारा योम किप्पुर के बलिदानों (इब्रानियों 9:12), बलि के बकरे (1 पतरस 2:24) और दया के सिंहासन (रोमियों 3:25) की पूर्ति का उत्सव है। पवित्र भोज के दौरान की गई प्रार्थनाएँ धूप की तरह ऊपर उठती हैं (प्रकाशितवाक्य 8:3-4), जो लैव्यव्यवस्था 16:12-13 की पूर्ति करती हैं।

पर्दे से संबंध:

- रोटी यीशु के शरीर का प्रतिनिधित्व करती है, फटा हुआ पर्दा (1 कुरिन्थियों 11:24, इब्रानियों 10:20), पहुँच खोलता है (इब्रानियों 10:19)।

“मार्ग” से संबंध:

- पवित्र भोज यीशु को □□□□□; मार्ग□□□□□; (यूहन्ना 14:6) के रूप में घोषित करता है, जो उनके बलिदान के माध्यम से पिता तक पहुँचने का मार्ग है (1 कुरिन्थियों 11:26)।

मेलकीज़ेदेक से संबंध:

- मेलकीसेदेक की रोटी और दाखमधु (उत्पत्ति 14:18) सहभागिता के तत्वों (मत्ती 26:26-28) का पूर्वाभास देते हैं, जो यीशु के मेलकीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) को नई वाचा (1 कुरिन्थियों 11:25) से जोड़ते हैं।

आत्मा से संबंध:

- कम्युनियन विश्वासियों की जागरूकता को मंदिरों के रूप में नवीनीकृत करता है (1 कुरिन्थियों 6:19), जहाँ आत्मा संवाद करती है (प्रेरितों के काम 2:17-18), लेकिन आत्मा प्रदान नहीं करता है, जो विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के माध्यम से आता है (प्रेरितों के काम 2:38)।

10. योम किप्पुर का उत्सव कम्युनियन के साथ मनाना

योम किप्पुर की पूर्ति का उत्सव सहभागिता के माध्यम से मनाना सभी विषयों को एकीकृत करता है:

- तैयारी:
 - पश्चाताप करो और स्वयं की जाँच करो (1 कुरिन्थियों 11:28), जो योम किप्पुर के कष्ट (लेवी 16:29) की प्रतिध्वनि है।
 - यीशु के प्रायश्चित (इब्रानियों 9:12) पर विचार करें, जो योम किप्पुर के लहू (लेवी 16:14-15) को पूरा करता है।
- धर्मग्रंथ पाठ:
 - लैव्यव्यवस्था 16: योम किप्पुर के अनुष्ठान।
 - उत्पत्ति 14:18-20: मेलकीसेदेक की रोटी और दाखमधु।
 - मत्ती 27:50-51: पर्दा फट रहा है।

- इब्रानियों 7:1-17: मेल्कीसेदेक का पुरोहित पद।
- इब्रानियों 9:1-14, 9:8: पुरानी वाचा की सीमाएँ।
- इब्रानियों 10:19-22: फटा हुआ पर्दा और पहुँच।
- यूहन्ना 14:6: यीशु "मार्ग" के रूप में।
- प्रेरितों के काम 2:17-18: आत्मा का संवाद।
- मत्ती 26:26-28, 1 कुरिन्थियों 11:23-25: पवित्र भोज की स्थापना।

□ प्रार्थना एक धूप के समान:

- धन्यवाद, पश्चाताप और मध्यस्थता की प्रार्थनाएँ करें (प्रकाशितवाक्य 5:8, 8:3-4), जो योम किप्पुर की धूप (लेवी 16:12-13) को दर्शाती हैं। सपनों, दर्शनों और प्रकाशनों के माध्यम से भी पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन प्राप्त करें (प्रेरितों के काम 2:17-18, यूहन्ना 16:13)।

□ पवित्र भोज में भाग लेना:

- रोटी: यीशु के शरीर, फटे हुए पर्दे (1 कुरिन्थियों 11:24, इब्रानियों 10:20), "मार्ग" (यूहन्ना 14:6), और मेल्कीसेदेक की रोटी (उत्पत्ति 14:18) को याद करते हुए इसे खाएं। पापों को उठाने के लिए उनका धन्यवाद करें (1 पतरस 2:24)।
- प्याला: पियो, उसके लहू, नई वाचा (1 कुरिन्थियों 11:25, रोमियों 3:25) और मेल्कीसेदेक की दाखमधु (उत्पत्ति 14:18) का जश्न मनाओ। अनन्त उद्धार के लिए उसकी स्तुति करो (इब्रानियों 9:12)।
- मंदिर होने पर ध्यान करो (1 कुरिन्थियों 6:19), जो उसके बलिदान द्वारा शुद्ध किया गया है (इब्रानियों 9:14)।

□ घोषणा:

- यीशु की मृत्यु (1 कुरिन्थियों 11:26), फटे हुए पर्दे, उनके मेल्कीसेदेक याजकत्व (इब्रानियों 7:17), और "मार्ग" के रूप में उनकी भूमिका (यूहन्ना 14:6) की घोषणा करो, योम किप्पुर के प्रायश्चित (इब्रानियों 10:10) को पूरा करते हुए।

□ सुसमाचार का आह्वान:

- प्रेरितों के काम 2:38, यूहन्ना 14:6 और रोमियों 10:9 साझा करें, अविश्वासियों को विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के लिए आमंत्रित करें ताकि वे आत्मा को प्राप्त कर सकें (प्रेरितों के काम 2:38) और "मार्ग" में प्रवेश कर सकें (यूहन्ना 14:6)।

□ समुदाय और उपासना:

- विश्वासियों के साथ सहभागिता करें, मसीह के शरीर के रूप में एकता पर जोर दें (1 कुरिन्थियों 10:17, इफिसियों 2:21-22)। स्तुति गीत गाएँ या भजन संहिता 22, यशायाह 53, या भजन संहिता 141:2 पढ़ें, जो योम किप्पुर के विषयों से संबंधित हों।

□ पवित्रता के प्रति प्रतिबद्धता:

- मंदिरों के रूप में (1 कुरिन्थियों 6:19), परमेश्वर की महिमा करने के लिए प्रतिबद्ध रहें (1 कुरिन्थियों 6:20), "जीवित बलिदान" के रूप में जीवन अर्पित करें (रोमियों 12:1), आत्मा द्वारा निर्देशित हों (रोमियों 8:14), जिसमें उसका संवाद भी शामिल है (प्रेरितों 2:17-18)।

मेलकीसेदेक से संबंध:

- पवित्र भोज की रोटी और शराब मेल्कीसेदेक की भेंट (उत्पत्ति 14:18) की याद दिलाती है, जो यीशु के पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) और नई वाचा (1 कुरिन्थियों 11:25) को सुदृढ़ करती है।

11. पर्दा फटने के निहितार्थ

यीशु के शरीर (इब्रानियों 10:20) के रूप में पर्दे का फटना, योम किप्पुर के विभिन्न तत्वों में ईश्वर के साथ संवाद और पहुँच को प्रभावित करता है:

1. महायाजक और मेल्कीसेदेक पुरोहित पद:

- योम किप्पुर: महायाजक पर्दे के पीछे दाखिल हुआ (लेवी 16:2)।

- परदे का फटना: यीशु की मृत्यु परदे को फाड़ देती है (इब्रानियों 10:20), और उनका आरोहण मेलकीसेदेक पुजारी के रूप में स्वर्ग में प्रवेश करता है (इब्रानियों 9:24) (इब्रानियों 7:17)।
- प्रभाव: कम्युनियन उनके शरीर, फटे हुए पर्दे (1 कुरिन्थियों 11:24), और उनके शाश्वत पुरोहितत्व का जश्न मनाता है, जो पहुँच प्रदान करता है (इब्रानियों 7:25)।

2. बलिदान/बलि का बकरा:

- योम किप्पुर: रक्त द्वारा अस्थायी रूप से प्रायश्चित किया गया (लेव 16:15-22)।
- परदे का फटना: यीशु का शरीर स्थायी रूप से प्रायश्चित करता है (इब्रानियों 10:20, 9:26)।
- प्रभाव: पवित्र भोज की रोटी और प्याला इस बलिदान की घोषणा करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)।

3. प्रार्थना के रूप में धूप:

- योम किप्पुर: धूप ने पुजारी की रक्षा की (लेवी 16:12-13)।
- परदे का फटना: विश्वासियों की प्रार्थनाएँ यीशु के माध्यम से ऊपर उठती हैं (इब्रानियों 10:22, प्रकाशितवाक्य 8:3-4)।
- प्रभाव: सहभागिता में धूप के रूप में प्रार्थनाएँ शामिल हैं (भजन संहिता 141:2), जो पहुँच को दर्शाती हैं।

4. विश्वासी एक मंदिर के रूप में:

- योम किप्पुर: तंबू परमेश्वर का निवास स्थान था (लेवी 16:16)।
- परदे का फटना: यीशु का बलिदान विश्वासियों को मंदिर बनाता है (1 कुरिन्थियों 6:19, इब्रानियों 9:14)।
- प्रभाव: सहभागिता इस पहचान को सुदृढ़ करती है (1 कुरिन्थियों 10:16)।

5. पवित्र आत्मा तक पहुँच:

- योम किप्पुर: आत्मा का कोई निवास नहीं (इब्रानियों 9:9-10)।
- परदे का फटना: यीशु की मृत्यु, उनके उद्धार कार्य का एक हिस्सा है, जो विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के माध्यम से आत्मा के निवास को संभव बनाती है (प्रेरितों के काम 2:38, इफिसियों 1:13)। आत्मा स्वप्नों, दर्शनों और प्रकाशनों सहित कई माध्यमों से संवाद करती है (प्रेरितों के काम 2:17-18)।
- प्रभाव: पवित्र भोज मंदिरों के रूप में पहुँच की जागरूकता को नवीनीकृत करता है (1 कुरिन्थियों 6:19), लेकिन आत्मा को विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, न कि केवल पवित्र भोज या परदे के फटने से (गलातियों 3:2)।

6. शुद्धिकरण और मेल-मिलाप:

- योम किप्पुर: रक्त अस्थायी रूप से शुद्ध किया गया (लेव 16:30)।
- परदे का फटना: यीशु का लहू अनन्तता प्रदान करता है (इब्रानियों 9:14, रोमियों 5:10)।
- प्रभाव: पवित्र भोज का प्याला इसी का प्रतीक है (1 कुरिन्थियों 10:16)।

7. विश्राम और पवित्रता:

- योम किप्पुर: इस्राएल ने विश्राम किया (लेव 16:29)।
- परदे का फटना: यीशु विश्राम प्रदान करता है (इब्रानियों 4:9-10), पवित्रता के लिए आह्वान करता है (इब्रानियों 10:22)।
- प्रभाव: सहभागिता के लिए आत्म-परीक्षण आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 11:28)।

“मार्ग” से संबंध:

- फटा हुआ पर्दा “नया और जीवित मार्ग” (इब्रानियों 10:20) है, स्वयं यीशु (यूहन्ना 14:6) है, पिता तक पहुँचने का मार्ग है।

मेलकीजेदेक से संबंध:

- फटा हुआ पर्दा, यीशु का शरीर, उनके मेलकीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) के साथ मेल खाता है, जिसका प्रतीक पवित्र भोज की रोटी और शराब है (उत्पत्ति 14:18)।

12. धर्मशास्त्रीय संश्लेषण

परदे का फटना (इब्रानियों 10:20), यीशु का “मार्ग” होना (यूहन्ना 14:6), और उनका मेल्कीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) योम किप्पुर (लेवी 16, इब्रानियों 9:8) को पूरा करते हैं:

- यीशु □□□□□; मार्ग □□□□□; के रूप में: पिता तक पहुँचने का अनन्य मार्ग, जो उनके विक्षिप्त शरीर (यूहन्ना 14:6, इब्रानियों 10:20) और शाश्वत पुरोहिती (इब्रानियों 7:25) में सन्निहित है।
- मेल्कीसेदेक का पुरोहित पद: यीशु के पुरोहित पद और सहभागिता की रोटी और दाखमधु (उत्पत्ति 14:18, इब्रानियों 7:3) की भविष्यवाणी करता है, जो योम किप्पुर के लेवीय क्रम (इब्रानियों 7:11) से कहीं बढ़कर है।
- परदे का फटना: ईश्वर तक पहुँच खोलता है (इब्रानियों 10:19), योम किप्पुर के प्रतिबंधित प्रवेश को पूरा करता है (लेवी 16:2)।
- पवित्र आत्मा का संचार: विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा (प्रेरितों के काम 2:38) द्वारा सक्षम, जिसमें सपने, दर्शन और रहस्योद्घाटन (प्रेरितों के काम 2:17-18) शामिल हैं, जो □□□□□; मार्ग □□□□□; (यूहन्ना 16:13) में मार्गदर्शन करते हैं।
- परमेश्वर तक उचित पहुँच: “मार्ग” के माध्यम से (इफिसियों 2:18, इब्रानियों 10:22), जो आत्मा द्वारा सुगम बनाया गया है (रोमियों 8:15)।
- बपतिस्मा: “मार्ग” में एक बार की दीक्षा (रोमियों 6:3-4, इफिसियों 4:5), आत्मा प्रदान करना (प्रेरितों 2:38)।
- सहभागिता: फटे हुए पर्दे, □□□□□; मार्ग, □□□□□; और मेल्कीसेदेक के तत्वों (1 कुरिन्थियों 11:24-26, उत्पत्ति 14:18) का जश्न मनाती है, मंदिरों के रूप में पहुँच को नवीनीकृत करती है (1 कुरिन्थियों 6:19)।
- प्रार्थना के रूप में धूप: आत्मा प्रार्थनाओं को शक्ति प्रदान करती है (रोमियों 8:26), योम किप्पुर की धूप को पूरा करती है (प्रकाशितवाक्य 8:3-4)।
- विश्वासी मंदिर के रूप में: यीशु का बलिदान विश्वासियों को मंदिर बनाता है (1 कुरिन्थियों 6:19), जिसमें आत्मा निवास करती है (इफिसियों 2:22)।
- योम किप्पुर से प्रमुख अंतर:
 - पहुँच: सार्वभौमिक (इब्रानियों 10:19) बनाम प्रतिबंधित (लेवी 16:2)।
 - स्थायित्व: शाश्वत (इब्रानियों 10:10) बनाम वार्षिक (लेवी 16:34)।
 - स्थान: विश्वासी मंदिर के रूप में (1 कुरिन्थियों 6:19) बनाम भौतिक तंबू।
 - दायरा: सार्वभौमिक (1 यूहन्ना 2:2) बनाम इज़राइल-विशिष्ट।

13. निष्कर्ष

यीशु को “मार्ग” (यूहन्ना 14:6) के रूप में, उनके मेल्कीसेदेक पुरोहित पद (इब्रानियों 7:17) और परदे के फटने (इब्रानियों 10:20) से योम किप्पुर (लेवी 16) की पूर्ति होती है, जो परमेश्वर की उपस्थिति तक अनंत पहुँच प्रदान करता है (इब्रानियों 10:19)। मेल्कीसेदेक की रोटी और दाखमधु (उत्पत्ति 14:18) सहभागिता का पूर्वाभास देते हैं, जो पिता तक पहुँचने के मार्ग के रूप में यीशु के शरीर और रक्त का उत्सव मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-25)। पवित्र आत्मा, जो विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा (प्रेरितों 2:38) के माध्यम से प्राप्त होता है, स्वप्नों, दर्शनों और प्रकाशनों (प्रेरितों 2:17-18) के माध्यम से संवाद करता है, विश्वासियों को “मार्ग” (यूहन्ना 16:13) पर मार्गदर्शन करता है और उचित पहुँच सुनिश्चित करता है (इफिसियों 2:18)। बपतिस्मा इस मार्ग का आरंभ करता है (रोमियों 6:3-4), जबकि पवित्र भोज इसका प्रचार करता है (1 कुरिन्थियों 11:26), विश्वासियों को मंदिर के रूप में नवीकृत करता है (1 कुरिन्थियों 6:19)। पवित्र भोज के साथ योम किप्पुर मनाना इन सत्यों को एकजुट करता है, और सभी को विश्वास के माध्यम से □□□□□; मार्ग □□□□□; का अनुसरण करने के लिए आमंत्रित करता है।